लक्ष्मीनृसिंह करावलम्ब स्तोत्रम्

श्रीमत् पयोनिधि निकेतन चक्रपाणे
भोगीन्द्र भोग मणिराजित पुण्यमूर्ते ।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धि पोत
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 1 ॥

ब्रह्मेन्द्र रुद्र मरुदर्क किरीट कोटि
सङ्घट्टिताङ्घ्रि कमलामल कान्ति कान्त ।
लक्ष्मी लसत् कुच सरोरुह राजहंस
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 2 ॥

संसार दाव दहनातुर भीकरोरु-
ज्वालावलीभि रति दग्ध तनूरुहस्य ।
त्वत् पाद पद्म सरसीं सरनागतस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 3 ॥

संसार जाल पतिततस्य जगन्निवास
सर्वेन्द्रियार्थ बडिशाग्र झषोपमस्य ।
प्रोत् कम्पित प्रचुर तालुक मस्तकस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 4 ॥

संसार कूप पति घोर मगाध मूलं
सम्प्राप्य दुःख शत सर्प समाकुलस्य ।
दीनस्य देव कृपया पद मागतस्य

लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 5 ॥

संसार भीकर करीन्द्र कराभि घात
निष्पीड्यमान वपुषः सकलार्ति नाश ।
प्राण प्रयाण भव भीति समाकुलस्य
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 6 ॥

संसार सर्प विष दिग्ध महोग्र तीव्र
दंष्ट्राग्र कोटि परिदष्ट विनष्ट मूर्तेः ।
नागारि वाहन सुधाब्धि निवास शौरे
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 7 ॥

संसार वृक्ष मघ बीज मनन्त कर्म
शाखायुतं करण पत्र मनङ्ग पुष्पम् ।
आरुह्य दुःख फलितं पतथो दयालो
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥8॥

संसार सागर विशाल कराल काल
नक्र ग्रह ग्रसन निग्रह विग्रहस्य ।
व्यग्रस्य राग निचयोर्मि निपीडितस्य
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 9 ॥

संसार सागर निमज्जन मुह्यमानं
दीनं विलोकय विभो करुणानिधे माम् ।
प्रह्लाद खेद परिहार कृता वतार
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 10 ॥

संसार घोर गहने चरतो मुरारे
मारोग्र भीकर मृग प्रचुरार्दितस्य ।
आर्तस्य मत्सर निदाघ सुदुःखितस्य
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 11 ॥

बद्ध्वा गले यमभटा बहु तर्जयन्त:
कर्षन्ति यत्र पति पाश शतैर्युतं माम् ।
एकाकिनं परवशं चकितं दयालो
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 12 ॥

लक्ष्मीपते कमल नाभ सुरेश विष्णो
यज्ञेश यज्ञ मधुसूदन विश्वरूप ।
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 13 ॥

एकेन चक्र मपरेण करेण शङ्खम्
अन्येन सिन्धु तनया मवलम्ब्य तिष्ठन् ।
वामेतरेण वरदाभय पद्म चिह्नं
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 14 ॥

अन्धस्यमे हृत विवेक महाधनस्य
चोरैर् महाबलिभि रिन्द्रिय नामधेयैः ।
मोहान्धकार कुहरे विनिपाति तस्य
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 15 ॥

प्रह्लाद नारद पराशर पुण्डरीक-

व्यासादि भागवत पुङ्गव हृन्निवास ।
भक्तानु रक्त परिपालन पारिजात
लक्ष्मी नृसिंह मम देहि करावलम्बम् ॥ 16 ॥

लक्ष्मी नृसिंह चरणाब्ज मधुव्रतेन
स्तोत्रं कृतं शुभकरं भुवि शङ्करेण ।
ये तत् पठन्ति मनुजा हरि भक्ति युक्ता:
ते यान्ति तत्पद सरोज मखण्ड रूपम् ॥ 17 ॥

इति श्रीमत्शंकर भगवतः कृतौ लक्ष्मीनृसिंह करावलंब स्तोत्रम् संपूर्णं ॥